

सूर्य चालीसा

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग,
पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के सङ्ग ॥

जय सविता जय जयति दिवाकर!, सहस्त्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर ॥
भानु! पतंग! मरीची! भास्कर!, सविता हंस! सुनूर विभाकर ॥ 1 ॥

विवस्वान! आदित्य! विकर्तन, मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥
अम्बरमणि! खग! रवि कहलाते, वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥ 2 ॥

सहस्त्रांशु प्रद्योतन, कहिकहि, मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥
अरुण सदृश सारथी मनोहर, हांकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥ 3 ॥

मंडल की महिमा अति न्यारी, तेज रूप केरी बलिहारी ॥
उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते, देखि पुरन्दर लज्जित होते ॥ 4 ॥

मित्र मरीचि, भानु, अरुण, भास्कर, सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥
पूषा रवि आदित्य नाम लै, हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै ॥ 5 ॥

द्वादस नाम प्रेम सों गावैं, मस्तक बारह बार नवावैं ॥
चार पदारथ जन सो पावै, दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावैं ॥ 6 ॥

नमस्कार को चमत्कार यह, विधि हरिहर को कृपासार यह ॥
सेवै भानु तुमहिं मन लाई, अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥ 7 ॥

बारह नाम उच्चारन करते, सहस्र जनम के पातक टरते ॥
उपाख्यान जो करते तवजन, रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥ 8 ॥

धन सुत जुत परिवार बढ़तु है, प्रबल मोह को फंद कटतु है ॥
अर्क शीश को रक्षा करते, रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥ 9 ॥

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत, कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥
भानु नासिका वासकरहुनित, भास्कर करत सदा मुखको हित ॥ 10 ॥

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे, रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥
कंठ सुवर्ण रेत की शोभा, तिग्म तेजसः कांधे लोभा ॥ 11 ॥

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर, त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर ॥
युगल हाथ पर रक्षा कारन, भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥ 12 ॥

बसत नाभि आदित्य मनोहर, कटिमंह, रहत मन मुदभर ॥
जंघा गोपति सविता बासा, गुप्त दिवाकर करत हुलासा ॥ 13 ॥

विवस्वान पद की रखवारी, बाहर बसते नित तम हारी ॥
सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै, रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥ 14 ॥

अस जोजन अपने मन माहीं, भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं ॥
दद्रु कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै, जोजन याको मन मंह जापै ॥15 ॥
अंधकार जग का जो हरता, नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥

ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही, कोटि बार मैं प्रनवौं ताही ॥
मंद सदृश सुत जग में जाके, धर्मराज सम अद्भुत बांके ॥16 ॥

धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा, किया करत सुरमुनि नर सेवा ॥
भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों, दूर हटतसो भवके भ्रम सों ॥17 ॥

परम धन्य सों नर तनधारी, हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी ॥
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन, मधु वेदांग नाम रवि उदयन ॥18 ॥

भानु उदय बैसाख गिनावै, ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥
यम भादों आश्विन हिमरेता, कातिक होत दिवाकर नेता ॥19 ॥

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं, पुरुष नाम रविहैं मलमासहिं ॥20 ॥

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य,
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध, होंहिं सदा कृतकृत्य ॥